TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4490**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

गोतमपृछा
प० १

॥ॐनमःपार्श्वविघ्नोपशांतये नमः॥

॥ए६०॥श्रीवीतरागायनमः॥ नमीऊणतिह्णनाहं जाणंतोतहयगोयमोभयवं अबुहाण

बोहणठ्ठं धम्माधम्मफलंबुछे १ भयवंसुह्यिनरयं सुह्यिमजीवोपयाइंउणसग्गं सुहिय

किंतिरियासु सुह्यियकिंमाणुसोहोइ २ सुह्यिजीवोपुरिसो सुह्यियइछीनपुंसउहोइ

अप्पाऊदीहाऊ होइअलोगीसलोगीय ३ केणवसुहउजाइइ केणवकम्मेणहुदउहोई

केणवमेहाजुत्तो जम्मेहोकहनरोहोइ ४ कहपंडिउयपुरिसो केणवकम्मेणहोइमुरक

खं कहसंसोरोतरियं कहविद्यानिःफलासफला ५ केणवनासइअबो कहवासंमिलइक 1 १

हवियरोहोइ उन्नोकेणनजीवइ वक्कमुत्तोकेणवावहिरो ६ जच्चंधोकेणनरो केणवमू
ंमणजिब्भनरस्स केणवकुठीखुज्जो केणवकम्मेणदासत्तं ७ केणदरिद्दोपुरिसो केण
वकम्मेणाइसरउहोइ केणवरोगीजायइ रोगविहुणोहवइकेण ८ कहहीणंगोमूउ
केणवकम्मेणहवइपंगु केणसुरुवोजायइ रुवविहुणोहवइकेण ९ केणवबहुवे
यणत्तो केणवकम्मेणवहुणविमुक्को पंचंदिउविहोउ केणदसणिंदिउहोइ १० सं
सारंकहविथिरो केणवकम्मेणहोइसंखित्तो कहसंसारंतरिउं सिवपुरंपावएपुरि
सो ११ सव्वजगजीववंधव सव्वन्नूसव्वदरिसणमुणिंद सव्वंसाहसुसमत्थं कस्सवकम्मस
फलमेयं १२ एवंपुच्छोसयवं तियसिंदनरिंदनमियपयकमलं अहसाहिउपयत्ता वीर
मउराइवाणीए १३ गोयमजंमंपुच्छसि एगाडीवाइमाइसव्वाइं पावइकम्मवसउ

[illegible]

कइ तंकम्मनिसामेह ॥ १४ ॥ जोधायइसराडं झ्यलिंअं पइ परथ्यादरस परमार्थ चिय

[illegible]

वेचइ वंजायाव परिगाहासत्री ॥ १५ ॥ जिमकोइ एकरानि नेहा धमाइ छे ति वसइ तेर निघरे

करीदमलीव्ह ग्ररनुसवेकाम काजकरइ एतलइ ते मोकरी वनमाहे ईधण लेवा गई ईधण लेईघरे

सरइ दीठी करे मोकरी ई धण घोतनि किम ग्यावी एतलेइ धणी नाह तेज जीमल करसइ वलीपा

वीजा हइ धणलेवइ ग्राप इमसंभलीमाकरी च्यू वीत पी मीति ते ई धणलेवा वन माहे गई ई धणले इ

पाछीवलता वनमाहे श्री वीर समोसस्यां हइ तिहां स्वामीनी देसना जोजन गामिनी वाणी सांभ

लती मो करीनी जरा ग्र पास वली सर्वगइ उत्साह तस्की ग्र रोग थई सेतें आयु मोकरी किम आवी मोकरी

संभवमा श्री भगवंतनी वाणी सांभलनी सुखने सातारई पछे दे राम तेई सुख वाहु थई इसो मी

परमेष्वरनी वाणी सांभलनी जीवनाउपकारि यतः अणंत जिण वरवाणी साउं सुणाइ नरनानी

सुविहाण अम्हम वायइ जीवाणी रसाकरइ सु जाण ॥ श्री जिनवाणी उपरि मोकरी इ टोन हइओ

[illegible]

वंनोमालीववो मायावी निद्दाराखा रापावा पिमुणा संगह सीला साधुणनिंदउ अहमो

[illegible]

॥ १६ ॥ आलसिम्मा लपसयी उइमुद्धायलोक यम्याय वद्धाउ रवसोगपडारा मरितेनरयं मिसोडायंइ ॥ १७ ॥

[illegible]

अथ प्रसंनचन्द्रकवग्रितीकथा उसखहा पाषीउपरिते कहइ छइ वसंतपुर नगरतीहां एक वनाश्रममारे इंमद

त्रिइसेनामइ तापसवसइ महाकष्टनोकरणहार च्यारिवेदनाजाणइ तिणप्रस्तावइ स्वर्गलोकनइ विषइ

बिनइ देवताछइ तेम्होएक धैमानर प्रसिद्धेवता सम्यकदृष्टीछइ अनेवीजो मिथ्यादृष्टी तो विक्रमारोमा

आपआपणो धर्मप्रसंसइ एककहइ जैनधर्मसरिखो बीजो धर्मनथी वीजोकहइ शीवमतसरिखो बीजो धर्मकोइ

नथी तेविहुं धर्मपरीक्षाकरवानिवास्ते मनुष्यलोकमंआव्या जिनधर्मीदेवतावोल्यो जिनेनो साधुनोनव

दिक्षितयती अनेशिवमतनो घणा कालनो वडेरोतापस तेविहुनीपरिक्षाकीजइ इसइम मिथिलानगरीनो पद्म

रथराजा वासुपूज्यस्वामीनी पासेनगरमांआव्यो ते साधुने परिक्षा करवासु छेडाव्यो तेनववदीक्षितसाधु देख

तिनमोघणनी परिक्षा करीइं तेसाधुतिहां जिहां अनेकविधना तप पाणी

सकलादेवामिथ्या मंडपनामकाज स्वामी पासेआव्यो मकराकर पवरजिनतुयद्वेन्हदी एइवो आपनो दि

वसथकी मार्गजातां देवता तिलमी जेएहनेदयानासूलाजसुवडाडइ इम चिंतवी एकमार्गे जह विषइमीले

करलादि घणा जीवनासमूह विकुर्व्या वीजेमारगें कांटानासमूहविकुर्व्या हिवइ तेसाधु मारगमाहि नी

वानी घात देषी कांटामाहि थो चाल्या लागा परंनील करलादिमार्गनी चाल्यो एवी जीवपरीक्षा वली देवताइं देव

गनाविकुर्व्या दिकनाविसयाणा देखाड्या पणं तिणसाधु मनसुं न मुनरही एवी जीवपरीक्षा वलीच्यवथीपरि

क्षाइं देवतासाधु प्रतिकहवा लागा उंचकरमें तिणिकारणेपे न करहोपा दीर्घआयु तेमाट

इसंसारमांसुष्यतोमलीइ हवेकराडं तपस्यापाप्यो वलतोसाधुबोल्योजेमारुं आउखुं घणुं छइ तो

घणोचारित्रपालसुं अनइ जोकदाचथोडुंहस्ये तोघणो तप करीस इहवुं धीर्यपणुंदेखीदेवताइं धर्मा ए

देवताइं जिनधर्मने उपरि चारित्रपरिक्षाकीधी पछवेवीजइ शिवमतनुंदेखता शिवमतना तापसनी परिक्षा

करवालागा यमदग्निइसिनामिं जूनो तापसमहाजटाधारी घणाकालसलगि आनिरहितोतेहनादेखि

3

गौतमपृछा
प० ३

पछी कोनें कारणइं तेषेइं देवताइं विमास्युं तीनो रूप करीनिं तापसना कानमांहि माला करी रह्या इसें चिडकलु मनु
ष्यनी साखइं करी चिडीप्रतिं कहइ वालाएं हूं हिमवंत पर्वतइ जाइ आवुं तुं इहां रहजे चिडीनइ कानिं कहइ उेउ
तिहपकउ मनेरी चिडी संघातिं आत्मा कोजइ रहइ तेस्त्री जावा न दे वली चिडीकलुं कहइ गोहत्या १ बालहत्या
२ स्त्रीहत्या ३ ऋषिहत्या ४ एत्यारइ हत्यानि पापि लीपुं छोकावुं तो चिडकली पसु नामं मांडइं वली चिडक
लीकहइ जेउ यमदग्नितापनिं पापे लागुं एहवो मंत्रस करइ तो जावा दं इमसांभली यमदग्नितापस चिडकला
प्रतिं कहइ वालागो हूं पापि किम तिवारइं चिडकलीउ कहीउ तापस तुम्हे कोपम करो आपणो शास्त्र विचारो यतः
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च १ तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चाद्धर्मं समाचरेत् १ एहवचन सांभली तापस
सांभलुं चिंतवुं हेंपा लीयु हणकरी प्रभु उपजावीइं तिवारइं तपस्यामुंकी कोष्टकनगरि जितसत्रुराजा तेह
निसहसबेटी सांभलीकमामांगवावालुं एहविपिण पामीइं वताइ तापस चाल्युं देवी जिनधर्मसी यमांनतो आप
कथयो तापस नगर माहि आवी राजा निकहलुं ताहरीउ श्रीमुकनिपरणाउ राजाइं कहुं जेउमनें वांछइ ते
हनीकहो मिमतमहनिविवारकमाउ तापस अंतःपुरमांगतः सघलीकन्याइ जटाधारीइ देखीने थूं
कया ऋषिवीसावी मयेनेवलइं सर्वकन्या वडी कीधी पाछां वलतां आंगणइ रमतां राजानी लघुबेटी रे
णुकादीठी तेहनिं विजोरो देखाड्यो रेणुकाइं बिजोरो लीधो ऋषि कहइ बालाभो एक कन्या माहरी राजानइ
मनासयुबीहनातेकन्यानी सहस्रगांइ सहदासदासीसहितदीधी पछइ ऋषि आश्रमइ साहस्रकन्यानि सानी कीधी
रमतपनो फल लह्यो पछी तेबालिकाने यौवनावस्था आवी पाणीग्रहण कीधो ऋतुकालनइ विषइ ऋषि
बालाणो एक चरु साधीउ कहिं आणुं जिम सातसिंबे उत्पन्न जाइं रेणुका कहि का लागी अम्हा बहिनं
विवाइ जिनसत्रुराजा बहिनी एक वेदोनासएकमर तोनइ एक कही रूउ जे सली माहरी बहिन हस्ति
नागपुर राजाने परणावी तेहनि चरु तानगी तिवार इतेणवि चिन्तकसव्यो स्त्रीनइ जाणी रेणुकाइं

चिंतव्युं जेम हुं रोविदो मृगथाउ तेसली उपाधवाओ क्षत्रिं आस्एनो उपम चरि नोंदेइ हस्तिनागपुरमोक
लो दिवसरेणुकानिजेपुत्र जायो तेहनु रेणुकानाम दीधुं अनइ बहिननें बेटो हूउ तेहनु कृतवीर्य इसो ना
म दीधुं एहवइ कोइक विद्याधर अतीसारपीड्यो तापसनें आश्रमें आवी रह्यो रेणुकाइ पनी गीसाकवी
धुं विद्याधर हरख्युं रेणुकानइ उष्णमान थई नइ फरस विद्या आपी तेविद्या रेणुकासाधी विद्यानिवर्दे
फरसराम इसो नामथयो पिरुउ देवताधिष्ठितफरसी सीधयार तीयें फिरै एहविप्रस्तावइ रेणुकाबह
ननिं मिलवानिकाजें हस्तिनागपुर गई तिहां कामनिर्दयीपणें बहिनेंइ सुसंगरूउ बेटो जाय्यो बेटा सहित रेणु
का घरआवी ऋषिकनें आवी तेदेषी फरसराम रीसाणो बेटासहित माता निमारी पछेतेवात सांभली हस्तिनाग
पुरनें धणी अनंतवीर्य सांभली रीसाणो तेणेंआवी तापसनो आश्रम विणास्यो फरसराम ईकहलेकरी
अनंतवीर्य मार्यो हस्तिनागपुरि अनंतवीर्यनो बेटो कृतवीर्य नइं बइसार्यो दिवसकृतवीर्यपितानें म
र्यो जाणी वयरलेवानेणी यमदग्नितापसनेंमार्यो तेयमदग्नितापसनें मार्यो जाणीनें फरसरामें कृतवीर्य
नइ मार्यो हस्तिनागपुरनो राज्य लीधो सर्वक्षत्रीनीजातिमरावी सातवार निःक्षत्री पृथ्वी कीधी इसेंए
कृतवीर्यराजानी राणीजे चउदसुप्रदीठा तेहनि अनुसारि बेटो जन्म्यो जाणी यनषंकमाहे नाठी तापस
नें आश्रमें नाठी आवी पछैतापसें राजानी राणी जाणीनें छानी राखी पुत्रनो जन्म हूउ तेहनो नाम सुभूम
इसो दीधुं एहवि प्रस्तावें फरसराम निमती नइ पूछयुं जे माहरो मरण कोहनें हाथइ निमती इ कहुं जि
णउकनम्त्रावीवाढ क्षत्रीना सं अनिनेढीर जिमें इवालकजीमसें तेहनें हाथु ताहरु मरणवइ पचइ
तेफरसरामें सर्वक्षत्रीनी दाढानी लोकरावी थालसरावी सिंघासणउपरि मुंकावइ इसें अवसरि वैताढ्य
पर्वतनो धणी मेघनाद मा विद्याधर आपणी बेटी निकाजि निमतीनें पूछुं निमती इ कहुं सुभूम

अजरसंपं पछेते विद्याधर आपणिवेदी तेहिस्यावी संयमनिपरणावी इसंसमानेपमिरेरतां संहर नेमा ॥
मेघवंज किसुंमाएसनीरही उअरु तिवारइमाइ कहो अतातसंपिमाधरस्वामीमाको द्यसिमागसुरनोर अ
जीकं तेहनिसइकरिआपणजुहिरामेस्युंमां तेवारजसांभलीसेनमरीसाचाले दिवाहिरनीकल्यो मेघना
नविद्याधरसहितदतिलागपुरिगयो दरवारजाइउभोरह्यो तिवारइदावीनीदाठासलीर्कोधरतीतेहिमप
वालकलीमवालागो एवानजाणीकरसंरंभकहुउअचान्ययो कुंभकरतांमेघनादविद्याधरनाको संयमनेमार
वाधस्यो एतलिवेसमनिदेपतांतेहनीपर जिमोहथीयारउलांणा संसमफरसरामनणीयालमुंको तेथा
लयकल्पथइनइलागो फरसरांमनारीहक्षिमतसुरनोराजलीओ पछेतेफरसरांमनावेरथीसंयमएकवी
सवारनिक्षत्रीकीधी चत्रारमनैवलेअएवंसाधीचक्रवर्त्तीथयउ बैतालिकनालिलोनवासी
धातकीपक्षरतक्षेत्रसाधणनलीलवणसमुद्रमाहिचर्मरत्नउपरिकटकच्छावीचाल्यु सर्वदेवताइंसमक
हमारगनमेलीदीयो सप्तममाहेबुडो अनेकजीवहिंस्यादिकपापकर्मसातमीनरकगयउ एवम
प्रश्नउपरिसंभूमचक्रवर्त्तिनीकथाजाणवी ॥ इति दशमः ॥
दिवेदेवगयि जेतयस्ताबादेतानिविष्ट पुरुनिस्सइहेष स्पानीमवि गुरुनाचनने निर्गुण तेमजीन्वदेवतातिजाइ उपमा ११
देवत्तं भवेसंजमदाणरउ पगइलहउकियालूय गुरुयणाणरउनिच्चं मरिउंदेवसुसोडाथइ ११
॥ दिवइवीजाप्रश्नउपरिआणंदनोदृष्टांत वाणिज्यनामग्रामजितशत्रुराजा आणंदनामागाथापति
महाधनाढ्यशिवनंदानामिनार्या तेहेंदेवी वसेः सर्वेलसपासुनगातिनीतो वुभासिरमारसरलस्वभाव
सदासमग्रचविस्तारदक्षा संसारमनेमनोहोमपत्नी १ वस्वादिकुलउसंयुक्त तिणिवाणिजग्रामनगरमवनी
हेतानकललमाहि जोमानाबमानिसारधिपथकानदः तिहां श्रीमहावीरइतिपलसामानेतलावमिलमीनासस्या

राजा चेटिसेनापतिआदिसर्वलोकवांदवागया तिहांआणंदपणिवांदवागया श्रीवीरनीवाणीसांभली
श्रावकधर्मअंगीकारकीयउ श्रावकनाबारव्रतआदरया तिहांपरिग्रहनुंप्रमाणकीधउ सोनइयाबार
कोडिमाकला उपवालिनेम गोकुलचमीकलो तेएकगोकुलएवहजारदसउपरांतिनेम इत्यादिसर्वपरि
ग्रहनोनेमकरीघरेसिधाया शिवनंदाइपणिभगवंतपासिश्रावकधर्मपडिवज्यो बेइंश्रावकथया हि
वएकेतलेकदिवसेश्रावकधर्मपालतोआणंदनिमनोरथथयो जेइंश्रावकनीइग्यारप्रतिज्ञाआ
दरंतेकेही यतः दंसण १ वय २ सामाइय ३ पोसह ४ पडिमा ५ अबंभ ६ सचित्त ७ आरंभ ८ पेसए
उद्दिट्ठ १० वज्जए समणभूएय ११ अस्यार्थः दंसणतेमासलगिसम्यक्त्वशुद्धपाले १ व्रततेवीजेम
हीने २ मासलगिव्रतशुद्धपालइ २ त्रीजेमासे ३ मासलगेसामाइककरि पूर्वेलीप्रतिज्ञासहित ३ च
उथीप्रतिज्ञाइपोसहकरि आठमचउदसनेपाखीनोदिवसनो ४ मासलगिपूर्वेलीप्रतिज्ञा
सहित ४ हिवइपांचमीप्रतिज्ञापूर्वेली ४ सहितवारीपांचमासलगिआठमपाखीनोपूर्वेलीपरिपोसहक
रि ठावेअइहरनोकाउसगकरइ रात्रिलोअननकरइ दिवसेलोइप्रकाशकारीएसाअनभीमइ दि
वसिसीयलपालइ रात्रिसीलनीमर्यादाकरइ वलीटोपहिरेकाछबाधीनवालइ अनेपोसहकरीति
वारेनिश्चलपालइ ५ हिवइछठीप्रतिज्ञा ६ मासलगिपूर्वेलीप्रतिज्ञासहितदिवसेयकरातिसीय
लपालइ ६ हिवइसातमीप्रतिज्ञापूर्वेली ६ सहितसातमासलगिसचित्तआहारसुषवासपमुषप
णिकंदनेकरइ ७ एतलेआठमासे प्रतिलोघइ ७ हिवइआठमीआठमासप्रायइ ८ हिवइनवमीइदे
सांसलवर्जिइपूर्वेली ८ सहितनवमासलगिचाकरपासेइआरंभनकरावइ स्वयंआरंभनकर
इ करावइनही ९ सर्वे ४५ मासथया हिवइ १० मीप्रतिज्ञाइउदिष्टवर्जइपूर्वेली ९ पडिमासहि
तदसमासलगिउदिष्टआधाकर्मीआहारवर्जे स्वरमुंडकरावइ अनिमत्तकिशिखाराषइ

गौतमपृच्छा ५

मुक्तप्राद[illegible] [illegible] मुहोकाशिक्षत निमित्त [illegible] १ पत्नी [illegible] [illegible] [illegible] ॥२॥

न्यतिपुमादिवादिनिधनमीर[illegible]नांसां[illegible]माणे[illegible] [illegible] निमाप्राचयानिमित्तं ए हिवे उद्धार नीत्र
निमाझवणी १० साहित्यमुणुकरता उपकार तीकरइ [illegible] कामणमलाक[illegible] [illegible] मलजमित्रतिशा
पालइ यतः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
१ एकतिवारी प्रतिहारइ [illegible] [illegible] करापइ अनेइ [illegible] [illegible] [illegible] करावो रजोहरणपात्रे
रापे कोई [illegible] कोणजी निवारइ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कांकणीपनिमासक[illegible]
प[illegible] वारि इमइ [illegible] अनिकायहि पत्रे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] तपनो [illegible] [illegible] समोसप्या श्रीनेमिप्रस्वामी वन [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] स्वामी आणंद नै वंदावा गया आणंद आवतो देखी [illegible] [illegible] नमस्कार कीधो
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इता तिवारइ आणंद कह्यो स्वामी
[illegible] [illegible] गौतमजी [illegible] [illegible] पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गौतम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आणंद कहि [illegible] [illegible] [illegible] गौतम [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आणंद [illegible] [illegible] [illegible] आणंद
[illegible] [illegible] [illegible] देवलोक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ५
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अकाव महम हुत्ती अकोदणोजोसव[illegible] वयसा [illegible] मति सुमाणुसीहोई [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ते वपति सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible] धर्म [illegible]
ते [illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible] एक वार वसंतमास [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] जेसर्व लोक वसंत [illegible] [illegible] ते सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सागरचंद
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] प्रियदर्शना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] सागरचंद्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] सागरचंद्र [illegible] प्रियदर्शना [illegible] जंबूद्वीप भरतक्षेत्र दक्षिण [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] कल्पद्रुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

6

गौतमपृच्छा
पत्र ६
मुनिनीवजय

सिरीथी वहंते स्वामीरुवउ पमिते वगमंनमारेहुगनीयादेखीपापिलोकोहजायो आपणासुदत्तं तेहथाप
णा कंसमथल वपरिघटावा पवहतिमनवाहनरत्तीअलगारुउं अजोवादनमायकरीमिकंवउ दुनिरतायक

सतवासुविणीयासुं अज्जव हलायउपथिरानिच्च सबंपरमखिला सोउरिसो हाइ नरोकण २१

कीचवालासहलावा मायाकवाडहि यचएमायणं नयकस्सयवीसद्दो सीउरिसोमहिलआहाइ २२

अत्र चिगाथाइ करीनि स्त्रीमरी पुरुषथाइ तेउपरिनागलानी कथा अनिं पुरुषमरी स्त्रीथाइ
तेउपरिनागलिश्रेष्टिनी कथा हिवे विहुं गाथानि कथा कहीइ छइ स्वस्तिमतीनगरी न्यायसार
राजा तिहां पद्मश्रेष्टि महासत्यवादी अनेसंतोषीछै तेहनिघरे पद्मनीनामा कलत्र छइ तेमनरूपवंत
छइ पणिकर्मनियोगइ तेहनेमुखरोगछै असत्यवादिनी मायावीछै सेठरोगमायानि उपचार घ
णाई कीधा पणिरोगनजाइ तेस्त्रीमायाइ करी भर्त्तारनिं कहइं अहे अनेरीस्त्रीपरणो सेवकरिवा
लागो मुखथिं संतोषवड एवामनकहीस पछइ एकदा कहता वनश्रेष्टि वेदाचं ताइ जातो मेघनी वृष्टिनि
धनव्यापहतउं देखीनिं निधानमनलीधं सेतसेजेनारनोतेलियार तिणितेनिधानदीठो अनिं श्रेष्टि
नेंपणितिहाजउंतो देखीनि तलारकइ निराजानेकह्यो तिवारि राजाइ कह्यो जा दो तइ निं हो वा
श्रेष्टि धनलीधं किंवा मलीधं तेलारजाइ निनीवे तोनिधानतिहांदीठो राजानिं आवीनिकह्यो
त्यानिंश्रेष्टिनिधानमनलीधं पछइ राजाइं श्रेष्टि नइतेडीपुछ्युं तेनिधानतुम्हिंमनलीधो श्रेष्टिक
हो स्वामी माहरिजागे श्रहदनिधानछै मंतवीजुसुर्पाकर पछिराजाइ पूछयु तेहणनिधान श्रेष्टि

६

कह्यो स्वामी संतोषरूप निधान राजानिं रत्नाइं ताणीहरख्यो नगरश्रेष्टिकीधो एकवार श्रुतकेवली
धनमांहे पधास्या राजानिश्रेष्टिवांदवा आव्या धर्मसांभल्यो सेविषमानुबंधोस्वामीमुखथिंसंतोषसच्चे ते
होकारण अनिं माहरे स्त्रीनिमुखरोग अनेंकाहल्यो स्वरलेंक्रमनयथी गुरुबोल्या पाछलिंभवइं
इणइ जमगरीकैथाहरीस्त्रीनागिलइ सेनामइ सेठहतो तेमदामायाविकपटीहतो अनिं तेहनिंतुम्हे
नागिलाइ सेनामिस्त्रीहती महासत्यवादीसंतोषणीहती दिवें एकदाप्रस्तावे नागसेठतो मित्रदेशां
तर जावालागो तिवारे घरे चपलमजांणी तेहनिं सयकरीनि पुत्रनिकहीनिनागश्रेष्टि तेहनिघरे नागिला
हे सतांथापणमुंकीगयो हिवें कर्मनियोगइ तेनागश्रेष्टिनोमित्र अथिपमुउ तेवारें तेसनीस्त्री केरइ थांस
नीडगमेकघणीवी छे पछे केतलेकदिवसे आपणीथांपणमागन्ने श्रेष्टिकने मांगी तेनदीगयो तिवारिंति
णिराजानिकह्यो राजाइं पुछिउं कोईसाखीछे तिवारितेहनेंस्वामी मेनागश्रेष्टिनीस्त्री नागिलासाखीछे राजाइ
तेनागिलानितेडिपुछ्यु हिवेसुंकहरे वाघअनेंदातडनेन्यायकडं एकपासितलवि अनिवीहु सत्यलोपना
कइ तेयहुवो चित्तवीसांचवोल्या होस्वामी थांपणमुंकीहति राजासत्यवचनसांभलीहरख्यो नागिलश्रे
ष्टिनिंमुक्यो नागिजननिदेशकरीथापी मगनमांहे यशघणो एकदाप्रस्तावि नागश्रेष्टिनिघरे मासखमणनेंपा
रणे साधुआव्या तावलखिलफासुनाहपाणवहिराव्या तेतुम्हे वेडंगमुनर्कर्मउपार्यो तेनागिलामरीनि
तुमपद्मश्रेष्टिथउ अनिंजेनागिलसेठपाछलिनविला रुकुंमरतारहतो तेमरीनिंतारहरीस्त्री पद्मिनीथईजी
भेगरूपनुं अतिकाहलीसुरउउ तेमूलवोल्यानोकारणजाणवो एसांभलीरे बिंदें वैराग्यपाम्या दिक्षालि
ह सुगतिगयो स्त्रीपुरुषनापरभउपरिपद्मश्रेष्टिपद्मनीस्त्रीनीकथा ५ हिवेचउथेकथाआगलिथी।

७

अणुबंधेण हयसत्तव पशुघातीय जेकोईमंसकं मुरखाकलं तुधापुविजयाप तेषाएसासबैलोकना तेजीवमरीनपंसाल्लेय २२
नं दमव पुमवइ अणिकरी जेवेदइ कळकाविवेदइ हेन्नाधम

श्चासवस सबसत्त्पसंवा गोलंछइस्वादियपिऊकरेइ मोसबाणनिदीणो नपुंसवहोइलोगंमि २३

हिवइ तेहनासाणा उपरि गोवालकनी कथा। वाणिजग्रामि मित्रप्रभराजा श्रीदेवीराणी तेणेनगरनिविषि
श्रीवीर स्वामी समोसर्या सर्वलोकवांदवा आव्या धर्म देशना सांभली सर्व हर्ष्या तिवारे श्रीभगवंतना वडा शि
ष्य गोतमस्वामी साततत्त्वप्रमाणदेहमान अक्षीणमहानसीप्रमुखलब्धिसंपन्न छे तेवखते
पारणातेनगरमांहि सिदाने उवाछइ तिणअवसरि कोएक चोरनि कोटवालिमारे बांधणे बांधे
तेहना नाकपगकानना काटे तेहना मांस सरीरनो मांस खवडावे तेहनइ देखी भयपामे एहवे
विकराल रूप देखी पापनाफल जाणी वैराग्यपामी श्रीगोतमस्वामीइ भगवंतनि तेहरूपनो पा
डिलाल पूछ्यो सर्व संबंध कह्यो भगवंत बोल्या हे गोतिम एहने एहरूप संबंधलि इणा उवणकारी छ
नपुरराजा राज्यकरइ तिहांनगरनिजो केधर्मनिअर्थे गाडते सिवायसवानिकाजिमांतवोकरवो
तिहांगाढसेसि सर्व लोक अजाणी वर्त्तसे तेनाप्रमभे कोइक लीघलोक तेह निगोवालकरी विनाम
वेदाबइ तेभला अनाइ दुष्ट पापी एकदालोप्रभूतंपदी मायनि पीक वाचावे माया नाना कडीतरोव
तलपंथ परसाण्डिसर्वलोकइ इम अनेक पापकरी पांचसे वर्षनो आउषो भोगवी जीव नरकि गयो यतः
घोतावलद समहादीया कीयेजीव विणास उत्पवि आगे जीवते पाम्भनगरनिवास उ इमअनेकनर
कमांदुख भोगवी इहांजनमथी दुखियासेठ तेहनी नाबोकां कणी सुलसभामतेह निघरे बेटो थयो
ज्ञाजुमा नवकरडिनाणी बलीतीय मोरीथयो एहवे पिता मुवो माता विसनपोखइ अनर्थनो मूलकरतो रा
जानी कामश्चतावेस्यावरसपणंतते संघातिककमसी वनाकरतोदेखी कोटवालपांमी राजाआपनतिआणी

करीमसचोल
ग प्रथमनके
उपनो ति हवी
सर्वीनहुमक
थयोएदृष्टांत
निदिलणकर्म
उपरिजाणवा
रतवच्नेमीक
था

७

रानाइविटंबणाकरीमार्यो मरीप्रथम नरकिंउपनो तिर्यंचमांहि भवभ्रमणकरस्ये एहदृष्टांत निर्दिलणकर्म उपरि जाणवो इतिपंच
मी कथा

दिवइ आहारसमीपीमसमणपरिमंकरमारे परमनविमिनमानइ पदेशिराजा अतिसंकलेप अवर्तसदाई अल्पायुमोजइ तेउ कष्टमेसरोगीदारि
तेरूहिवइ जेपरजीवनेरविदेयमलाकरी एसलमाविकमत वर् तिणपद दालिवकुराअकरुवे अल्पाकयरी २४
मरेतेकेमुत्रण्घवइ इति प्रसाबो

मारेइनिद्धअनिद्धमाणो परलोधंनेवमन्नए किंचि अइसंकिलिट्ठचित्तो अप्पाऊ सोनवेपुरिसो २४

हिवइ आघा गाथा उपरि इहां शिवकुमार यज्ञदत्तनी कथा कहीइछइ चंपानगरीसमुद्रदत्तश्रेष्टि धार
णीभार्या शिवकुमार यज्ञदत्त बेपुत्र केतलेककालि समुद्रदत्त श्रेष्टि मरण पाम्यो बेटइ पितानो मृतकार्य
कीधो पछि कर्मनियोगि अपर माताकरणी यज्ञदत्तसुं लागु जाई जेतली संसारमहीविषय जीपतां दोहि
ली यतः अस्कारणरसणाक माणमोहनी वयाणयंसमयं गुत्तीणयमणगुत्ती चउरोदुखेणजीप्पंति १ पछि शिवकुमा
र लोकमिलइ जाणी यज्ञदत्तनिमारिवानो उपाय चिंतव्यो तेवातधारणीइ जाणी यज्ञदत्तनिकह्यो शिवकुमार ग्र
न्हनिमारिवानो उपाय चिंतवेछे तेमाटि उन्हे शिवकुमारनि प्रथम अमारो जिम आपणसुखिरहीयइ तिवारिमंत्रे
इश्रुतिय यज्ञदत्तकहिवा लागो जेवमलाइनि किमभारीयपरंते मंत्रइ विषया लुब्ध थकी यज्ञदत्तनि वारवार कहवा
लागी तिवारि यज्ञदत्तपणिमातु पछैते मंत्रेइ वमाताई निपणिकहवा लागी जेउन्हनि उन्हारा लजानो नाशमार
वा चिंतवइ हिवे तेणे कदाचित्तावि वेंजासाई गोकुलसंभालवा गया पिणमाहोमाहि विश्वासमकरे एकदाचित
मनाइ गाइ वनमांहे जातां यज्ञदत्तमारिवानो उपायकर्यो शिवकुमार आणी नासी गयो अनुक्रमि शिवकुमा
रि यज्ञदत्तनिमार्यो पछइ शिवकुमरनी मायइ मंत्रेइ नैमारी इमनिर्दयपणि मारतो मारिहिंडे करी मरणपाम्या
तिण्हीकुमविपापइं करीउंबर अनुकंपेभूवा आगलिघणाकाललगइ दुखपामसी एवअमरकपरिशिव
कुमार यज्ञदत्तनी कथा संपूर्ण इति छट्ठी उपरि कथा हवे सातमी गाथा उपरि मनीमल्लानो उत्तरकहेछइ

तिहिंठालिहिली
वा अप्पाउ जोला
एकमंपतिति
तंजइहवा
इत्तालवति १ कुम
वनलानवतिरत
हासकसमणेवा
मास्तो वानपका
१ सुण आलेम
तिहिली अमण
पाणं खाइमं सा
इमं पडिलाभी
लालविला

गोतिमप्र०
५१८

अभय जीवनिं जमाय दयानीपरिणामजीकोई ... तेमुंकमनो ... हे गोतिमए बातमिसंदेह ... २५

माणघडोनजीवो दयावरो अलयदाणसंतुठो दीहाऊसोउरिसो गोयमभणिउंनिसंदेहो २५
तथा अभयदानउपरि श्री तिना थमेघ...रादि अनेक दृष्टांत जाणवा वलीएक ऋषिनी कथा कोइएकवनपंथ
माहे एकवनखंडमाहे एकऋषीश्वरतपस्याकरिएहवी प्रस्तावि कोइकपारधीवनखंडमाहे सिकारकरवाआ
यावइ तिहांमृगलो एकनासतो थको ऋषिश्वर आगेनीसर्यो पछे पारधी ऋषिप्रति पुछ्यु सोमीइहां एकमृग
आव्यो तिवारि ऋषीश्वर विचारी बोल्यो यापश्यति न शाश्रृते याश्रृते सा न पश्यति इत्यादि वचनकही
पारधीनिप्रति बोध्यो पछइ घणाजीवनी दयापाली स्वर्गलोकिं उपना एह अभय उपरि ऋषीश्वरीकथा

[illegible] २६

देयननियअंसते दिन्नंतम्मेइ वाररादिन्नं एएहिं कम्मेहिं लोगहिं विवज्जिउहोइ २६ सय

[illegible]

णासणवंथवा सव्वपत्तंवपाणियंनाविं हिययएएहिंइउहो गोयमलोगंमिसंदेहो २७
दशाइं उपारमीयडां नीवलरदिगमायाकहेछइ मथुरानगरीइ धनश्रेष्ठि द्रव्यासविकोडिद्रव्यनोधणी
परमहाकृपणः यतः कृणसींचइ ऋकसलुणइ करइपेटसुवाणि मडहड देखीजलंतम कोइसुवउतारू
आत्ति १ इत्यादि गुणइसंयुक्तवइ जेकोईमागणआवइतो तेहनिमाथिमथवाइचढइ धर्मकाजिदक
मीनावइ घरमाहि कोइदेषतानाइसकैनही पहरिसकैनही एतलइनगरमाहि घसातिनीवेलाइकोईलो
कनामनलीइ ध्रिवइते सेवणकद्यावत्ताविवावीसकोडिनिधानगाड्यांछइ तेदेवाला दैषितो सर्वलिस
लाध्यया दैषीमूर्छागतथपमो वलीमवेतन्य कउंतेतलिकिणिरीके कह्यो आविनिश्चयेसेवमाहरोवावी
सकोडिनोधन पाणीमाहे गुणोतेसांभलीमहामूर्छितरूवे वलीसचेतनकउं एहबुचिंतवाजागोजेमापारू

७

कर्कतोसर्व निफलथाइ इमलक्ष्मीजाती देषीनेचिंतव्यो जेमइकांइपुन्यनकीधे माधीनहीषर्ची
दीतोलक्ष्मीमाइजाइ एहवेंवनमाहिज्ञानीपुरुषआव्या सांभली सेविवांदवागयो बषाणसांभलीपछे
पुछ्युंभगवन् कुंकृपणस्पइ कर्मइ ऊउं अनिमाहरीअपारलक्ष्मीतेकिमगईतेकहो तिवारिकेवल
ज्ञानीकहवालाग्या पाछिलेसविउंउनिकंत्रापणेध्रातकीधेंदेलरवतक्षेत्रइसाइ ऊंता तेमध्येऊवमो
लाईतेमहासरलदातार अनिउलऊमोलाई तेमहाकपटीऊष्टकृपणमी वडालाईनिदानदेतां देषिनि
लाकेपछिवफिलाईऔलजमाविदोकीधो वडालाईनिलक्ष्मीघणीरवधतीजाइ अनिलऊमानी
लक्ष्मीघटतीजाइ इमवडओमनाईवडालाइसेती सातवेरीवा किश्राकरीवादिलीधो पछिवडेसाइ वे
राग्यउपनिदीक्षालीधी निर्मलचारित्रपाली स्वर्गलोकेगयो लहुडोलाई पणिअंतसमइ अज्ञानकष्ट
करीमरीअसुरकुमारमाहे ऊपनो तिहांथीचवीइहांधनसारसेठकउं अनिवडुंलाईहतेदेवलोकथीच
वीइहाकामलतानगरीइं विवहारीयानिघरेपुत्रपणिउपनो अनेकस्त्रीयादिलोगसोगवीदिक्षालेईकर्म
क्षयकरीकेवलज्ञानऊपनो पछि विहारकरतांइहांआव्या पाछिलासवडालाईनास्नेहमाटिहर्षपाम्यो
पछितइ पोतइ दाननदीधो अनेअनेरानिदेतां थकांअर्जनाकरी इमअंतरायकर्मवांधीतेकर्मथीताह
रंधनगयुं इमसांभलीश्रेष्ठिनेमलीधो जेअाजिपछिमाहरेधनथइ तेसर्वसुपात्रिसतइवइ इमश्र
भिग्रहलेई पछइअनेकदानपुन्यकरीसुखीथया इतिकथा दानदेवीनोफलकथितानुक्रम

[illegible] २८

गुरुदेवयसाहूणं विणयपरमेंतयंसणीउग्ग नयभणइकिंचिकटुयं सोखुरिसोडाथारमुहउं २८

९

[illegible]

...गुणो विणयविणियं निवडइ गीलवसिणोधि माणी विबुंधउंडो सोवायइडहउ सुरिमो २०

[illegible]

[illegible]

डोपवडइ सुणइ वितह अवंपाउडइदइउवएमं सु...मुगुरुजन निडु(रो) मरिउं सो...हाइ मेधावी २१

[illegible]

तवनाणगुणसमिद्धं अवमननाइ किर नमाणइ मूढो सो मरीकण...सो दुमेहो ...मए पुरिसो २२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

...सुधर्म वयगुरुसमो भरि उसापुनि उद्दोइ २१

[illegible]

मांसखादकपीवइ किं वापदपिता किंचि धम्मए एयं विचित्ता भरि उसाकोद्दनोदोइ २२

[illegible]

गोतिमचरा
प ११

[illegible]

कुकडसिंतरलाव सूयरदिरणीयसमडीविय [illegible] संसवकालववरलीसं ॥ ११

सावसिडीकापं तासंनकरहन्नोवरीहेह परपीउवकणाउ [illegible]सवेउगिसा ॥ २५

[illegible]

विडा विलागांवा मिडाविण[illegible]उडीआ अवमलउ आयरिसं साविडानिफलातस्स [illegible]

मलउ आयरिय विणयसमन्नगुणाहिसंडाडा इमसाविडागहिया सासफलामहाडलागांमि ॥ २६ ॥ १२

[illegible]

उडानियमगाहइ ततसाहूणादेइसहाए दिलइनाणुतप्पइ तस्सहिगोम्बाइधणगिद्धी ॥४०॥

[illegible]

पसुपक्षीमाणुसाणं बालविउडाणिवेसमयपावा सोअणगवीजायइ नहडायतीविवक्खिज्जा ॥४१॥

[illegible]

उज्झाइदयापरउ वेकणुत्ताणायमीसवेतुविसो वधिरत्तं असुयदोलणइस्सय सोवहिरोहोइपरजंमे ॥४२॥

[illegible]

१३

[illegible]

अदीठंवियदिठं उाकरतासडोअमनिरविसका सामाजकोअलसयइ पायमनियकम्मदासए ॥४३॥

[illegible]

14

प॰१५

[illegible]

[illegible]

सिजाधामस्सपिदाव्हे श्रेकवांडाकबेइपाणिणं बालाराम विणासी साजडिडायएवुरिसे ॥४५॥

[illegible] १५

[illegible]

[illegible]

गामम्मि सपमुक्कारइ अइलारारोवणोणपीवइ णएणमवरिपायेणं गायमोसासंवेखुडो ॥४६॥

[illegible]

[illegible] प.१९

[illegible]

[illegible]

लक्कइहाइयकमो [illegible] ॥५१॥

[illegible]

[illegible]

सकामइछायाणगुणाधणयाणं साहुण सीलकलियाणं [illegible] ॥५३॥

[illegible]

डोयाइ इतिसंसो वायउवायपिडरवीयंडीयं सीमंमगतसंधि तोयमसीपंगलोमहाइ ॥५४॥

[illegible]

19

गौतमपृछा प-२९

[illegible]

उजुयसहावो पावपिक्कय जीवाणहिंसणपरोय देवयगुरुपडिणीउ अपत्तअसुवतोहोइ ५५

[illegible]

सरलसहावो धम्मिकमाणसो जीवाणरक्खणपरोय देवयगुरुपयभत्तो गोयममणुवस्सिओहोइ ५६

[illegible]

डोडंगदंतकयरक्खवग्ग ओतेइसिं ऊणयवेलणाउ सोपावं निवारुणो जायइ बहुधेयणगुरिसी ५७

१९

[illegible]

20

नेमिमवृत्ति
प.२०

जोसमायपयुणाल मीष्यावेदयंधणाउमरणाउं कामपश्यदियाए नेोमसुदंवेय एणातस ५५

हि एयअथमीहत्तावपधि जिमरलनी कथाकहइछइ सुघतिष्ठनगरे चंदननामइभवहारीयो वसइ महा
लखपलांमी तेहनइवाहएकमइनामरुली एकवारसाक तेहनइंधरे आव्या आसुकल्याहारदीयो मसमइ
कीवपार्जु सेविकदोसामी माजइनेइ इहांजारहो सेकनावचनथीलासलांणी प. बेसा क धर्मोपदेश
दीर्ध सेवसेतालीनियमत्रसमक धर्मनोलीकार कराव्यो पछइ तेहुं मन्यकत्व कायेध पीपाले परंसंतान
नीचिंतातेणवकारी अनेकदेवदर्शादेव्रपालादि आराध्या तोहीसंतानवनी चिंतामिटइ तिवारइ आप
णी आलदेवीनी सेवाकरवामांनी सेवाकरता केतलेक दिवसे गोत्रजा प्रत्यक्षथई कहइं सेवक सुमांगइछइ तिवार
इ सेविकइंमाता आप्दे पछइइदेवीइ सेवनी परिक्षा निमित्तइं कह्यं जो तुमकतिसाणानी ज दे तो जिमताहरे
इ तियारे सेविकइं एकाममुखथीनथाइ संतानकुंउं अथवा मतकुंउ पणि इंजी घनौ व धनकंमं धम्मां
सलीदेविसंभ्रमथई वरदीधं तारे महा सम्पवंत पुत्र कां संं पछइ अनुक्रमिं सेस्तनेक दिवसें उयनोजन्म
थाउं ओछंवनइंजिंद्र नरइ वेलामस्पाद्ं आठ वर्षनो थयो लेखशालइ भणावा भण्यो वहोत्तर
कलासीषी पछइ यौवन पम्यो जाणी पितापाणिग्रहण कराव्युं अनेक दान उपक्याइ मीव माता दिकनी पदयात
नामिमुकादि गुरुदेवनी सेवा स्कि साधवइ एरथइ अल्पायुध उयजया गमाहे पाकम्मोसा सेवपुत्र सहित
बांइवारया धर्मोपदेशदीधं सेव अ नापक्षिलालवधेमसंबंधपत्र्यो गुरें कही इएउ अनमां धनदत्त नामइ
वोलितहतो माथकपामी धर्मीसालसीनि लक्षणनी कथा कहे छे चंद्रवाणाउदि कर्मे मगानी देवलोकें गयो तिहांथी चवीतिहां आव्यो इनिकथा ५५

जावमोहोइकमिझो अनाणेनुमइसवं कोसलंवेयमीवोड तथाएमिंदियवत्तणं ५७ द्वितीयाम
घ्यअनपरिणाइ लक्ष्मण सेवनी कथा कहइछइ मलयागरनगरे नरवाहन विप्र मोहलक्ष्मण इस नामइ सेवक

साधावसयाउ ओ
या मइजी कीन
बाइ नाइक या
अनाक इमि ओ
नीलमिलाइ १

सइ तेह नीमोहनी नामइस्त्री तेहनेंघरें पितानीआमनीतकीथी तेहनी ऊपरि सेवनीमोहनीपली सही
रापिवानिवासे मनेकारयवउपायकरि जेरपेमादनीजनी जाइ यतः यो ददाति मसकृतिरेवहत परवंचितसंवित
या वचित पसकारणबर्हिकंस्य यथा रूपरणस्य पुत्रे धनकांक्षितस्य १ जोस्तातिनमत्रके थिलवेसतिनस्यततुज्रस्य
नेणमघि इत्तमः अरुपो रक्तिनिमांचस्य स्वार्थे २ इमनवमीपाय कष्ट सहइ तेनो वालमपहिरइ तुइपरी
तिजेमाहरसरोषणादलुंप्रइछे नाम्पायुका एक कोडरीमयरक इत्यादि बहुकाविकासमनतो केतलेक दिने मो
हसलपमिवेटोहुउ तेजेमएफ्रहनुनामदीक पर उत्रउपरिमनलंतलोइ हिरण्याव विसइनयमाइ अनुक्रमि
इ इसप्ताभ्यास पाइतो अनिकाकलाविद्यासीखी पाणिग्रहण कराव्यो पछइ पुत्र यौवनावस्थाइ अनेकदम्
पितकाला लागो जेमाह्रइपिमाइ लोकनीमर्यादा यतः कदर्यो पार्थ वित्तं सोप्पा सत्प्रपतोमवेत दंतादसति
कर्तिमनी कुमतितिलया १ इहां याउ यार्के मनकाजे नीजन नाच्यवेकोइ योउ पढ़ी पसरत के सुनकाली
माहेछ १ इत्यादि चिंतवतो बेट ह्याथरदान आलामंडावी अनेक सुकृत पोतनइ यो आधार संबंधमनुव्य कम
देनरांसि इमवव्य इसीदेखीपितानीरमयकरवाला नालो तिवारइ बेटो यारतइ सन्मुखावालागो हे पिताजी पुत्र कर्तव्य
करतो सकीवरमइ नही यतः दानसदेवमहयाविवक्षया विनापक कांइ नाशय मनि:ल घरो पिसन्मा मनरे
रविकः अनय्यावामिलुमानमे मरहीलि: १ इत्यादि हजुक्ति हांसे बेटो मनुमीसमजानइ परं पितानी मोइलक्ष्मी
उपरि थी वसरइ नही एकवार चोर आवी धनलेइगया तेधनगयुं जाणी मोहसक्ष्मणनें घेलोअनुवलागो
धनलारस्तुंमन पामेमो हवै तेमोहलक्ष्मणने बेटो संसार मोक्षस्वरूप जाणी दुष्कर स्वकार्य न करि अनुक्रमि
मनीमोहलक्षकानी धीमें पछइ वाविदिवसलगी संसार मो महस्पतिचावि यतः कीर्दृक मित्रमसमापात कामेजम
नीकोसेसात इत्यादि चिंतवतिसंसारः सर्वायं समस्ति पद्मर १ इत्यादि उपदेशवचनसांभली मोहलक्ष्मणने पश्चात्ताप
यायी संसारथी हुई पितानी ममत पणु थी मारे ते पितामह छोली अनशन महासीलना वस्त्रपीना कीर्तिं गय उ
पुरकारानहा दि चित्रपारी करतां अनुक्रमि पितामोहलक्ष्मणइन्द्र सिमरीए केंडीमां दिगयउ इहतुं संसारनी मोह विछोडी
धर्मी आदरीनेप किया दिकवीने सदा सिष्या इति मोहलक्ष्मणकथा संपूर्ण ॥ श्री॥ ॥

य: जाप्पविनं
पने निबाहेन
अवहतः मत
स्य मिकनते
नोनुलक्ष्यय
क्षुन: जे अव
सरेण इन्ये-
अनन्तर मिछा
जाणयो तिंहां
उनायो आव
दिलोवोजाए
वजए थी आ
लिकें इत्येव

५५
२१

गोतिमपृछा
पत्र२१

जेकहीनही नहीजीव नहीपरलोक नहीकोइ कुमीश्वर इमजेनास्तिकपणुंमन तेहसरखाइसंसारभिमइऊरं ८७

नयधम्मोनयजीवो नयपरलोगुत्तीमवेकोइरिसी इयजोमन्नइमूढो तस्सचिरोहोइसंसारो ८७

जेअमानइधर्मिक्लोक अर्धर्मनाफलवइ अस्तिकदस हवीजाइप लोकमाहि जेमानइतेहनइ संसारनोछेद ८८

धम्माधिम्मवलोए अत्थीयहुम्मोविम्मडिसहम् रिसिणोवीमन्निलोए जोमन्नइसोनसंसारी ८८

अनइविकुणगाथानइपरिउकइटांतकमइछइ राउगृहीनगरिमूरअर्ज्जवीर२ एविकुंगुसकत्तिनएपा मरमातिकमतीकाउ धर्मअधर्मपुण्यपाप जीवअजीवएकोइमानेनही एहवइसुत्तावइरजगृहीनगरीसाधुआव्या लोकवांदिवागया सरूधर्मसांभलीलोपी साधनीइसंसारकरी लोकनेसाधुनीवसंसाफरतादेषी साधुपासि आव्यो कहिवालागोअरेमूढीकोइलोकानइविप्रतारेछो सुकसंघातइवादकरोतोकुंजाणु अम्हेपंफिस तिवार इकुगिककहिवादइमकिनथाइ जोताहरिवादिनीमनसाकरतोराजानिदरबारमाविनिहीवादकरस्यां एवइ सरअनइसाधुनीयोलाउससाइआव्या पवइसूरनास्तिकमनमान्यो कहिसंसारमाहेपुन्यपापसुषदुषजीवकअ जीवकांईनही धर्मअधर्मिमाताषितासाईबंधकोईनथी साधुवाद्योजोजीवनथीतोसुखदुःखकुणजोगवइ इन्यपापनथीतोजीवविनाकुणजोगवइ ताहरमकोपिणाजीवहीनजोगवइ मातापितानजाइतोबोहलीप्रतिपालनाकुणकरइ इमकेतलीवारसांभलीनाइसाधुपराजोएीयसंसाकीधी सूरनिंघोटोजाणीने ...कीधो एवइसूरगल अनेलकालसंसारमाहेरूलसी साधुआपणोसुचधर्मपालीसदगतिपांम्या भवमुक्तिनासुषपामसी इमजाणीमुनीपरिनास्तिकमतवारनीजे इतिनास्तीकथासंपूर्ण उणपंनवंदतोसल

जेजीवषीनेलहाममदीमावीके सहीलमअकइकरीविजषितहारी तेजीवसंसारसमुद्र सिद्धिमुक्तिरूपनगरीनइपा
मयुलीकरीसहितछइ २तेहनोकुवेइ इतरीनइ मइतेहनुः

जोप्पिममलनयाचरिओ दंसणोदिविल्तुसिमुसरीओ सोसंसारंतरिऊ सिद्धिपुरंपावएदरिसो
८९ जेजीवनिर्मलचारित्रमइ तेसर्वकालइ वीजिनमहावीरदेवइ अरुणमनुजीवालायो फितवी धर्मअधर्मेनाफलकहा
मवाछिवतर

८९ इंगोयामएपुछं तंकहियंजिणवरेणवीरेण भवाभावहंसया धम्माधम्मफलंप्पय

८९ अडतालीसप्रश्निअनइऊत्तरइ गाथानीसंख्याएछ्वीसयामी संक्षेपमात्रकरीकही गौतिमनेउ
एउत्तर

ठ ८९ अडयालीसापंजलाचिं गाहाणाहाइचउसठी संखावण्णलणीया गाहमन्

ध्यायोटाअर्थतेप ९४ इतितैतिमप्रश्नसूत्रार्थ ... तबालावबोधस्तोव... [illegible]
एव

हामहद्याचि ९४ इतिश्रीगोतिमपृछावालावोधकथासंपूर्णम् समाप्तमितिसदं ॥

... इतिभेनः

संवत्१५८५कार्त्तिमितिआषाढसितपक्षेतिमवासरे इदंपुस्तकालेखि लिखतोयंगणिसवलसागरेण वाच्यमानचिरंनंद्यात् फेकणीनगरे श्रुंसंतवउ कल्याणमस्तु ॥श्री॥ इदंपुस्तकवांचेसुणे तीफांथरिदेकांन सोउतमसहमीलहइ पांमलोकथांम १ श्लोकसंख्य

२१

22

म